पैसा बोलता नहीं पर सबकी बोलती जरूर बंद कर देता है।
– अज्ञात

"जान है तो जहान है"

अगर आर्थिक गतिविधियां तुरंत शुरू नहीं की गईं तो एक बड़े तबके के सामने भुखमरी की समस्या आ सकती है जो न सिर्फ कोरोना से लड़ाई को कमजोर करेगी बल्कि एक नया सामाजिक संकट पैदा कर सकती है। ऐसे में बीच का कोई रास्ता निकालना जरूरी हो गया है।

अवनिश राय।

केंद्र सरकार ने देश भर में लॉकडाउन बढ़ाने का मन बना लिया है। कुछ राज्यों ने पहले ही इसे और पंद्रह दिन बढ़ाने का फैसला कर लिया और इसकी घोषणा भी कर दी। जिस तरह से वायरस से संक्रमित लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है, उसे देखते हुए लॉकडाउन जारी रखने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। लेकिन इसके साथ कुछ और चुनौतियां गहरा रही हैं जिसका इशारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। शनिवार को मुख्यमंत्रियों के साथ विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए बात करते हुए उन्होंने 'जान है तो जहान है' की जगह अब 'जान भी, जहान भी' पर ध्यान केंद्रित करने की घोषणा की, जिसे उद्योग तथा कृषि समेत विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए लॉकडाउन में छूट के संकेत के तौर पर देखा जा रहा है। दरअसल प्रधानमंत्री को अहसास है कि 21 दिनों के लॉकडाउन से उत्पादन लगभग ठप है, कृषि कार्य में बाधा आ रही है, मजदूर बेरोजगार हैं। अगर आर्थिक गतिविधियां तुरंत शुरू नहीं की गईं तो एक बड़े तबके के सामने भुखमरी की समस्या आ सकती है जो न सिर्फ कोरोना से लड़ाई को कमजोर करेगी बल्कि एक नया सामाजिक संकट पैदा कर सकती है। ऐसे में बीच का कोई रास्ता निकालना जरूरी हो गया है।

बहरहाल लॉकडाउन के इस दूसरे दौर में जहां हमें सोशल डिस्टेंसिंग का पूरी तरह पालन करना होगा, वहीं समाज के विभिन्न वर्गों की आवश्यकताएं भी पूरी करनी होंगी। इंटरनैशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन के मुताबिक कोरोना वायरस के संकट के कारण भारत के असंगठित क्षेत्र के 40 करोड़ श्रमिकों के पूरी तरह निर्धन और वंचित होने का खतरा पैदा हो गया है।

मार्च के अंतिम हफ्ते में किए गए एक सर्वे के अनुसार दूसरे राज्यों में फंसे रह गए लाखों मजदूरों में 80 प्रतिशत से ज्यादा मजदूरों के पास लॉकडाउन (14 अप्रैल तक) से पहले ही पूरी तरह राशन खत्म हो जाएगा। इसलिए कई विशेषज्ञ मानते हैं कि सरकार को अपने भंडारों से उन्हें तत्काल अनाज उपलब्ध कराना चाहिए। इसके अलावा उन्हें तेल, नमक,चीनी और साबुन भी उपलब्ध कराए जाने चाहिए। यह भी देखना होगा कि सरकारी योजनाओं का लाभ सभी जरूरतमंदों तक पहुंच रहा है या नहीं। इसी तरह मजदूरों की आवाजाही रुकी होने की वजह से गेहूं की फसल की कटाई नहीं हो पा रही है।

लॉकडाउन के वर्तमान दौर में पुलिस के दुराग्रह के कारण आवश्यक चीजों की सप्लाई प्रभावित हुई। पुलिस की अत्यधिक चेकिंग से परेशान होकर कई ट्रांसपोर्ट वालों ने काम बंद कर दिया। अभी सिर्फ 10 फीसदी ट्रक सप्लाई का काम कर रहे हैं। कोशिश यह होनी चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा ट्रक निकलें और अनिवार्य वस्तुओं की आपूर्ति बढ़े। इसके साथ ही हमें टेस्टिंग को बढ़ाना होगा। अभी देश में रोज करीब 17,000 टेस्ट हो पा रहे हैं,जिसे एक लाख करने का लक्ष्य है। यह लक्ष्य जल्द हासिल करने की कोशिश होनी चाहिए। लॉकडाउन के इस दौर में अस्पतालों को और ज्यादा क्षमतासंपन्न बनाना होगा।

समय और काल

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

जीवन की घटनाएं समय और काल से नियंत्रित होती है। हालांकि काल नियत नहीं होता। हमारा पर्यावरण और प्राकृतिक दृश्य नियतकालिक नहीं है। यह व्यतिक्रम हमारे जीवन पर भी प्रभाव डालता है। एक व्यक्ति जो लगातार एक ही स्थान पर रहता हो उसे काल के व्यतिक्रम का अनुभव ही नहीं होता है और इस कारण से उसका जीवन पूर्वानुमानित होने की वजह से नीरस रहता है। यद्यपि इस तरह के जीवन में उत्तेजना और चुनौती का अभाव रहता है। दूसरी तरफ, शाश्वत घुमक्कड़ का जीवन असंतुष्ट और अप्रत्याशित होता है, और शायद समाज पर इसका कोई हल्का प्रभाव भी पडता है। बिना हमारे कुछ किए प्रकृति एक रुख में नियतकालिक होकर दूसरे में नहीं होती है। ऐसा शायद इसलिए होता हो कि ऐसा न होने पर जीवन बोझिल और नीरस होता जाएगा।

संपादकीय

फसल तो पक चुकी

कोरोना त्रासदी के कारण अभी तक बिहार में कोई साढ़े तीन लाख प्रवासी मजदूरों की 'अस्थायी घरवापसी' हो चुकी है। सूबे के बाहर रोजी–रोटी की जद्दोजहद में लगे ये प्रवासी बिहारी नीतीश कुमार के कोई पंद्रह साल के 'सुशासन' के अघोषित, मगर मुखर अंबेसडर रहे हैं। इस बार इस सुशासन की असलियत से व्यक्तिगत तौर पर रू–ब–रू होने का उन्हें पूरा मौका मिल रहा है। कोरोना की स्क्रीनिंग, जांच या क्वारंटीन केंद्रों को लेकर अनुभव बड़े ही कटु रहे हैं। इसकी प्रक्रिया, जांच व संदिग्धों के इलाज की उपलब्ध सुविधा सवालात खड़े कर रही हैं। सूबे में आ रहे प्रवासियों की स्क्रीनिंग खानापूरी से अधिक कुछ नहीं दिखती है। कोई शारीरिक जांच पड़ताल नहीं होती, कुछ प्रश्नों के उत्तर दो–ढाई मीटर की दूरी से पूछ कर लोगों के हाथों पर मुहर मार दी जाती है और उन्हें घर भेज दिया जाता है। सरकार के लिखित आदेश जो हों, जांच के लिए खून के नमूने अपवादस्वरूप ही लिए जा रहे हैं।

क्वारंटीन केंद्रों की हालत के बारे में कुछ न कहना ही बेहतर है। अधिकांश केंद्र स्कूलों में बनाए गए हैं जहां स्वच्छता का घोर अभाव है। अंधेरे में मच्छरों के बीच लोगों को रखा जाता है। नतीजा, अधिकांश केंद्रों से संदिग्ध निकल लेते हैं। कहने की जरूरत नहीं कि यह किस हद तक खतरनाक हो सकता है। टेस्ट किट्स के साथ ही डॉक्टरों व अन्य स्वास्थ्यकर्मियों के लिए मास्क भी अब जुटाए जा रहे हैं।

केंद्र व राज्य सरकार ने कोरोना त्रासदी के दौर में राहत पैकेज की घोषणाएं की हैं। पर, इनमें से अधिकांश मध्य वर्ग के हित में हैं। इस वैश्विक महामारी के दौर में भी गरीबों–वंचितों का ख्याल उतना ही रखा गया जितना सरकारों की यूएसपी के लिए जरूरी है।

हमारा फर्ज तो ये बनता है कि हम उनकी खामोश मदद करें पर हमारे लिए तो यह स्वर्णिम अवसर है। इससे भला हम क्यों चूकें।

मदद के लिए प्रचार करें

सुशील कुमार 'नवीन'

लाख समझाओ पर हम समझने वाले थोड़े ही हैं। दूसरों के घाव को कुरेदने में हमें जो अलौकिक सुख महसूस होता है उसकी कोई सीमा नहीं है। आदत से मजबूर हैं न। देश पर विपदा की घड़ी है और हम नाम के दानवीर कर्ण बनने पर अड़े है। वक्त के मारे लोग भूखे मर रहे है। और हम अपने प्रचार तंत्र से उनकी इस हालत को ही भुनाने पर तुले हैं। हमारा फर्ज तो ये बनता है कि हम उनकी खामोश मदद करें पर हमारे लिए तो यह स्वर्णिम अवसर है। इससे भला हम क्यों चूकें।

सुबह जब उठते हैं तो सोशल मीडिया पर गर्वित चेहरे लिए दानी सज्जनों के छायाचित्रों की भरमार रहती है। अच्छा इनकी दानवीरता भी गजब की होती है। पॉलीथिन में आटा,, छोटे–छोटे पैकेट में नमक मिर्च मसाला, थोड़ी सी चाय पत्ती, चीनी आदि होती है। चलो अच्छी बात है मदद हमेशा सामर्थ्य अनुसार ही करनी चाहिए। बेशर्मी की हद तो ये है कि इस मदद को अपना मार्का लगाकर फोटो पोस्ट कर देते है। भलेमानसों जिसकी तुम मदद कर रहे हो उससे भविष्य में तुम्हें भारत रत्न तो मिलने वाला नहीं है। फिर ये चोंचलेबाजी क्यों।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में किसी भूखे को भोजन

और प्यासे को पानी पिलाने को मानवता का सबसे बड़ा धर्म बताया गया है। किसी प्रचार के लिए किया गया कार्य इस श्रेणी में नहीं आता है। रहीम जी ने लिखा है–

देनहार कोई और है भेजत सो दिन रात
लोग भरम हम पै धरै याते नीचे नैन ।

वे कहते हैं कि हम कहां किसी को कुछ देते हैं। देने वाला तो दूसरा ही है, जो दिन–रात भेजता रहता है इन हाथों से दिलाने के लिए। लोगों को व्यर्थ ही भरम हो गया है कि रहीम दान देता है। मेरे नेत्र इसलिए नीचे को झुके रहते हैं कि माँगने वाले को यह भान न हो कि उसे कौन दे रहा है, और दान लेकर उसे दीनता का अहसास न हो। कहने का भाव यह है कि ईश्वर के दान पर रहीम अपना अधिकार नहीं मानते। फिर इस महान दानवीरता का श्रेय लेने की होड़ क्यों। किसी मजबूर आदमी की बेबसी का मजाक उड़ाने का हमें कोई हक नहीं है। दान क्या है? मनुष्य और अन्य प्राणियों को खुशी देना। जब आप सोचकर देखें कि कर्ण चाहता तो अपने कवच कुंडल इन्द्र देव को देने से मना कर सकता था। पर उसने ऐसा नही किया। बर्बरीक ने अपना शीश काट कर दे दिया। शिवि ने एक कबूतर के लिए खुद को काट कर पलड़े में रखवा दिया। महर्षि दधीचि ने वज्र निर्माण के लिए हड्डियों का दान कर दिया। ये सभी भी यदि ऐसा करने से पहले कहते कि हमें इसका लाभ दो तो क्या उनका आज वो नाम होता।

ऐसे में हम ऐसा कौन सा काम कर रहे हो जिसके लिए तुम्हें नाम चाहिए। तुम वही काम तो कर रहे हो जिसे तुम करने के काबिल हो। यदि तुम्हारे अंदर सामर्थ्य न होता तो तुम ऐसा करने की सोच भी नहीं सकते थे। फोटो सोशल मीडिया पर डालने से तुम्हे लाइक तो जरूर मिल जाएंगी पर जो तुम्हें लाइक कर रहे हैं वो मन ही मन तुम्हारे इस कार्य की हंसी उड़ाते है। फिर ऐसे प्रचार का क्या फायदा। इसलिए इस बात की गांठ बांध लो कि प्रचार के लिए किसी की मदद मत करो, मदद के लिए प्रचार करो। ताकि दूसरे लोग भी तुमसे प्रेरणा प्राप्त कर औरों की मदद को प्रेरित हो।

अष्टयोग-5023

	5	2	3	7		
1	33		40		34	6
7		4	6		2	3
	27	5	34	1	29	
2				4		5
	25	6	30		38	
	4		5	2		7

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5022 का हल

2	6	4	1	5	3	7
6	37	5	28	2	26	1
7	5	2	6	3	1	4
1	31	6	33	4	28	2
3	6	1	4	7	2	5
4	31	3	33	6	36	6
5	2	7	4	1	6	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

किसानों का संकट

मोहन। ग्रामीण बिहार की आज की सबसे बड़ी समस्या रबी की कटाई है। गेहूं और रबी की अन्य फसलें तैयार हैं। पर किसानों का संकट यह है कि उसे खेत से खलिहान और फिर घर तक लाने का उपाय नहीं हो पा रहा। इस बार फसल कटनी के लिए मजदूर तो उपलब्ध हैं, मगर थ्रेशर के ड्राइवर की कमी और लॉकडाउन किसानों की बड़ी परेशानी हैं। लॉकडाउन के कारण थ्रेशर की मरम्मत का काम भी नहीं हो पा रहा क्योंकि कल पुर्जे की दुकानों के साथ–साथ इनके वर्कशॉप बंद हैं। फिर, लोगों के घर से निकलने पर रोक और सोशल डिस्टेंसिंग के नियम को लेकर प्रशासन की सख्ती के कारण भी मजदूर नहीं मिल रहे। इस बारे में सरकार के स्पष्ट आदेश जारी नहीं हुए हैं। केला, आम, लीची जैसी फसलों के किसानों का भी बुरा हाल है। इन फसलों के व्यावसायिक खरीदारों के आने का सबसे उत्तम समय यही है। इस लिहाज से लॉकडाउन बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को तहस–नहस कर रहा है।